

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 117	Year 15	Volume 01	May 2023 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150
------------------	-----------	---------	-----------	------------------------	---------	--

## PRAYER IN VEDIC CONTEXT

First of all, it is important to understand what 'PRAYER' is in Vedic context. As I have understood after remaining in contact with Arya Samaj which derives its philosophy from Vedas, it involves meditation, connectivity, thanks giving and asking the higher self for something you need or value, provided it is directed for bringing good and is not annihilating for anyone. God doesn't accept the prayers



which are directed for the annihilation of others. Again, vedas say that you shouldn't ask only for yourself, but for the peace to prevail everywhere and the happiness of all creatures in this Universe in the spirit of ' Serve bhavantu Sukhina!'. May peace and happiness prevail everywhere in this Universe!

Meditation and connectivity is the state of oneness with God, called 'dhyān' in the language of sage Patanjali. It means perfect connectivity and focus on higher self. Meditation also provides an

Contact:

**BHARTENDU SOOD**

Editor, Publisher & Printer

# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : [bhartsood@yahoo.co.in](mailto:bhartsood@yahoo.co.in)

opportunity to take note of our weaknesses like anger, greed, ignorance of our true nature, jealousy, pride, wanton desires, habitual tendencies which prove to be toxic for our mental health and needs to be phased out. Nothing wrong, if a person takes out time to recollect his deeds in the recent past, which were impacted by above mentioned vices and then promises to make amends.



**Neela Sood**

Next is thanksgiving. According to Vedas the first three in the order who should be thanked daily without fail are God, parents and your guru. God as the creator of this universe has bestowed upon us all that which sustains our lives and with out which our lives are just not possible -like air, water, Sun, fire, flora and fauna. Parents give birth and raise us by giving their best within their means. Guru has to be thanked because he shows us the path by giving knowledge and removing our ignorance. This feeling of gratefulness to all those who do good to us, generates contentment and resultant peace of mind by keeping us away from ego and arrogance.

Last step is to ask for something. Here the best thing is to ask, not only for self, but for everybody on this earth, especially those who are less privileged. One Sufi saint said- “I pray for those for whom there is no body to pray.”

What should we ask for? It is a personal matter and depends upon the state of mind, your spiritual advancement and the situation in which you happen to be. But, I feel a few things which we can ask for are-wisdom for self and wisdom for everybody. Wisdom is nothing but good thought process so that we remain untouched by arrogance, lust, anger, attachment and greed. Then we should ask for good health and last for the peace to prevail everywhere on this planet.

I think that only those who have faith in higher ups and make prayer a habit can realize the importance of prayer. In this regard I want to quote what the Former Chief Justice and eminent Jurist Mr Bhagwati said after the demise of Sathya Sain Baba, “When I used to write Judgments I always felt as if Baba was moving my hands” Only those who do prayer can understand what he really meant. It is a fact that when we become one with some great power he starts dwelling in us and he guides us in all our actions.

In the end I will sum up by saying that prayer plays the role of support system in our lives. Makes us feel less lonely and more motivated.

**Ms Neela Sood**

हर व्यक्ति में राम और रावण दोनों ही विद्यमान होते हैं। जब हमारे अंदर के राम उभरकर बाहर आते हैं तो हमारा विकास होता है और जब हमारे अंदर का रावण सिर उठाता है तो विनाश अवश्यमभावी है।

# WANTED BRIDE

*for a Hindu Khatri, CA 28 years 6 feet fair colour,  
working in a reputed firm at Chandigarh. Arya  
Samaj family and pure vegetarian. Living in  
Chandigarh Tricity will be preferred  
Contact - 8146931916 (Ashok Chopra)*

शिमला का **SHARDA**  
**कामधेनु जल**

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए  
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

Marketing Office - H. No. 231 Sector 45-A, Chandigarh-160047

## पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कौश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :-  
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414  
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272  
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है । H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9465680686 या Paytm No. 9465680686

## हिन्दु धर्म तभी बच सकता है जब हिन्दु वेदों के साथ जुड़े

नीला सूद

स्वामी दयानन्द ने अपने समय में हिन्दुओं की हालत को देखते हुए नारा दिया था, फिर से वेदों की तरफ जाओ जिसका अर्थ यही था कि वेदों को पढ़ो, समझो और दूसरों को भी समझाओ। आज जो मैंने हिन्दु धर्म की हालत देखी है उस को देखते हुए तो स्वामी जी की यह बात बहुत सही लगती है।

मैं और मेरे पति अभी हाल में आसाम घूमन के लिए गए थे। इसी दौरान हमने गुहाटी का कामख्या मन्दिर देखा। बहुत सी बातें मन का दुखी करने वाली थी। पहली थी कि देवी के आगे पशुओं की खुले आम बली दी जाती है। यह काम वहां पुजारी ही करते हैं फिर जो चाहते हैं उनको बली दिय हुए पशु का मांस छोट छोट टुकड़ों में काट कर प्रशाद के रूप में दिया जाता है। बली दिए हुए पशु की छाल अलग कर काटने का काम भी मन्दिर में ही किया जाता है। आप उन को पुजारी कहेंगे या बुचड़। बली देने वाले और प्रशाद लेने वालों की लाईन लगी हुई थी।



दूसरी दुख देने वाली बात यह थी कि वहां पार्वती की योनी की पूजा की जाती है। जब पूछा कि योनी की पूजा का क्या तुक है तो उसका उतर था कि जो तर्क शिव लिंग की पूजा का है वही तर्क पार्वती की योनी की पूजा का है। महर्षि दयानन्द का हिन्दु जाति पर बहुत बड़ा उपकार है कि पहली बार कोई ऐसा व्यक्ति आया जिसने पौराणिक पंडितों द्वारा स्थापित इन सभी गलत कुरितियों के विरुद्ध आवाज उठाई। यह सिलसिला स्वामी श्रद्धानन्द के समय तक चलता रहा उस के बाद आर्य समाज भी कर्मकाण्ड की धारा में वह गया। हां यह हमारा अच्छा भाग्य है कि आर्य समाज अभी भी इन गलत कुरितियों से बचा हुआ है। यह कब तक चलता है यह तो कहना मुश्किल है क्योंकि न तो हम आपने बच्चों को आर्य समाज लाते हैं और ना ही उनको अपने पास बिठा के वेद की मान्यताओं के बारे में बताते हैं। न ही हमें यह परवाह है कि वह आर्य समाज से अलग हो कर किस तरफ जा रहें हैं

शायद आप ने भी यू ट्यूब पर बहुत से उन महिलाओं को सुना होगा जो कि हिन्दु धर्म को छोड़कर ईसलाम को अपना लेती हैं। आकितर का कहना होता है कि हमें ईसलाम में आने के बाद कुरान व ईसलाम की दूसरी पुस्तकें पढ़ने के बाद ही पता लगा कि धर्म क्या चीज है और धर्म द्वारा कैसे अपने जीवन को सुधारा जा सकता है। चाहे आप कुछ भी कहें परन्तु 90 प्रतिशत हम हिन्दुओं के बच्चे यह नहीं बता सकते कि हिन्दु धर्म है क्या और हिन्दु धर्म की कोन सी ऐसी चीज है जो उनको गर्वित महसूस करवाती है। कारण हम हिन्दु माता पिता शायद ही बच्चों के साथ बैठकर कभी धर्म के बारे में चर्चा करते है। हम त्योहार तो मनाते हैं पर उन में कर्मकाण्ड और घटिया मनोरंजन के सिवा कुछ नहीं होता। यहां तक कि हमारे घरों में जो इकठठे होकर आरती करते थे उसकी प्रथा भी खत्म हो गई है जैसे कि हम आर्य समाजियों के घरों में संध्या करने की प्रथा खत्म हो गई है। धर्म तो वह है जो हमारे इस जीवन को और अगले जन्म को भी अच्छा बनाए। अर्थात् हमारे द्वारा किए कर्मों को सुधारे। सत्य को अपनाए व असत्य को त्यागे यह धर्म की बात है क्यों यह हमारे व्यवहार व कर्म को अच्छा बनाती है और मन को शान्ति देती है। हिन्दु धर्म नहीं है परन्तु वेदों की कही बातों पर अधारित धर्म जिसे हम सत्य सनातन वैदिक धर्म कह सकते है, ही धर्म है। बात वेदों की कही बातों को समझने की है व जीवन में धारण करने की परन्तु यहां भी हमें स्वार्थी पण्डितों ने भाषा में उलझा दिया। संस्कृत चाहे कितनी भी अच्छी भाषा है परन्तु आज के समय में जब बच्चे अपने कैरियर की रेस में उलझे हुए हैं, चाहे लड़का हो या लड़की, उनके पास संस्कृत पढ़ने का समय नहीं। गायत्री मन्त्र या प्रार्थना मन्त्रों को बोलने का तभी फायदा है जब कि उनके अर्थ को समझ कर जीवन में धारण किया जाए। तो बजाए इसके कि हम



अपने बच्चों से यह अपेक्षा करें कि वर संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर वेदों के मन्त्रों के अर्थों को जाने। क्यों नहीं हम उन वेदों की मान्यताओं को सरल लोगों की भाषा में ही प्रस्तुत कर देते।

यहां मैं सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग के प्रयत्नों का उदाहरण देना चाहूंगी। देखिए उलहोने वेदों की मान्यताओं को कितने सरल ढंग से प्रस्तुत किया है।

### वेदों की मान्यताएँ सरल भाषा में श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग द्वारा

- 1 **ईश्वर एक है,** अनेक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश आदि उसी एक ईश्वर के नाम हैं।
- 2 **ईश्वर सर्वव्यापक है।** वह सारे ब्रह्माण्ड में सब जगह समाया हुआ है। सभी प्राणियों और पदार्थों के अन्दर भी है वह और बाहर भी है। कोई स्थान ऐसा नहीं जहां ईश्वर नहीं है।
- 3 **ईश्वर निराकार है।** उसकी कोई शकल सूरत नहीं है। उसकी कोई मूर्ति नहीं बन सकती।
- 4 **ईश्वर अपने सभी काम स्वयं करता है।** उसके कोई पीर, पैगम्बर, अवतार या एजेंट (Agent) नहीं हैं।
- 5 **ईश्वर भक्त कौन** – जो अज्ञानता और दरिद्रता को दूर करता है।
- 6 **जीव (आत्मा) परमात्मा का अंश नहीं है।** इनके गुण, कर्म, स्वभाव अलग अलग हैं। ईश्वर एक है, आत्माएं अनन्त हैं।
- 7 **श्री राम और श्री कृष्ण ईश्वर नहीं थे और न ही ईश्वर के अवतार थे।** वे महापुरुष थे। ईश्वर न जन्मता है और न मरता है। वह सदा बना रहता है।
- 8 **धर्म** - धर्म का सम्बन्ध आचरण से है, दिखावे के बाहरी चिन्हों से नहीं। सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना और पक्षपात रहित न्याय करना ही धर्म है और यही मानव धर्म है।
- 9 **सभी मनुष्यों का एक ही धर्म है** – मानव धर्म। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी आदि धर्म नहीं हैं, वे अलग अलग सम्प्रदाय ;त्मसपहपवदेद्ध या पंथ हैं।
- 10 **सुख-दुख का कारण मनुष्य के कर्म हैं, ग्रह नहीं।** मनुष्य जैसा कर्म (काम या कार्य) करता है ईश्वर उसी के अनुसार सुख या दुख के रूप में फल देता है।
- 11 **कलियुग' पाप का कारण नहीं है।** कलियुग कोई भयानक चीज नहीं है, और न ही कलियुग कुकर्म करने का ठेका है। जैसे सोमवार, मंगलवार आदि दिनों के नाम हैं ऐसे ही सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग समय गणना के नाम हैं।
- 12 **तप** - शुद्ध विचार रखना, मन को बुराईयों की तरफ न जाने देना, सत्य का आचरण करना, शुभ कामों का करना आदि तप कहलाते हैं। आग की धुनी लगाके सेंकने का नाम तप नहीं है।
- 13 **तीर्थ** - ज्ञान, विज्ञान, शुभ गुण-कर्म-स्वभाव, परोपकार, निर्वैर, निष्कपट, सत्य आचरण आदि दुखों से तारने वाले हैं – इसलिए ये तीर्थ हैं। हरिद्वार, काशी जाने या नदी-तालाब में नहाने का नाम तीर्थ नहीं है।
- 14 **व्रत** - पति या पत्नी की प्रसन्नता के लिए उससे सद्व्यवहार करने का संकल्प लेना और उसे निभाना ही व्रत है। सत्य आचरण का प्रण कर लेना और उसे निभाना ही व्रत है। किसी विशेष समय या दिन भूखा रहना या किसी विशेष पदार्थ का सेवन करना या न करना व्रत नहीं है।
- 15 **शुद्धि** - मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।
- 16 **स्वर्ग, नरक** - स्वर्ग या नरक नाम के कोई विशेष स्थान नहीं हैं। विशेष सुख का नाम स्वर्ग और विशेष दुख का नाम नरक है।



- 17 **जाति** - सभी मनुष्यों की एक ही जाति है – मानव जाति। गाय, घोड़ा, कुत्ता, सांप, चिड़िया आदि अलग अलग जातियां हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र – नाम योग्यता और काम के हिसाब से दिए गए थे, जन्म के हिसाब से नहीं।
- 18 **हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं** - चार वेद, ग्यारह उपनिषद, छे शास्त्र, रामायण, महाभारत, गीता आदि किसी ग्रंथ में भी नहीं लिखा कि हमारा नाम हिन्दू है। सभी ग्रन्थों में हमारा नाम 'आर्य' लिखा है।
- 19 **पुण्य, पाप** - परोपकार आदि अच्छे काम को पुण्य कहते हैं और अन्याय आदि बुरे काम को पाप कहते हैं।
- 20 **पण्डित** - धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सबका हितकारी मनुष्य पण्डित कहलाता है। अनपढ़, धूर्त, बहकाने वाले को पण्डित नहीं कहते।
- 21 **वैराग्य** - सब बुरे कामों और दोषों से अलग रहने का नाम वैराग्य है।
- 22 **पितर, श्राद्ध** - जीवित माता-पिता, दादी-दादा, नानी-नाना आदि का नाम पितर है। उन्हीं की भोजन, वस्त्र, निवास, मधुर भाषण आदि से सेवा करना श्राद्ध कहलाता है। जो मर गए वे अब पितर नहीं हैं।
- 23 **ज्योतिष** - दिन-रात का हिसाब, विभिन्न ऋतुओं का हिसाब, चन्द्र ग्रहण-सूर्य ग्रहण आदि का हिसाब ज्योतिष कहलाता है। भाग्य बताना, जन्म पत्री बनाना, शुभ लग्न-मुहूर्त बताना, तागा-ताबीज देना, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि सब अविद्या हैं। ये ज्योतिष नहीं हैं।
- 24 **हिंसा, अहिंसा** - किसी से वैर भाव रखना हिंसा कहलाती है। किसी निर्दोष को दण्ड देना हिंसा है। दोषी को दण्ड देना हिंसा नहीं, अहिंसा है।
- 25 **मांस मनुष्य का भोजन नहीं है।** मांस मनुष्य के लिए शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक दृष्टि से हानिकारक है। पशु जब अपने को मारे जाने की स्थिति में देखते हैं तब उन्हें जो कष्ट होता है उसे याद करके भी मांस नहीं खाना चाहिए।
- 26 **शराब, तम्बाकू, गांजा, भांग आदि मनुष्य के शरीर और बुद्धि का नारा करते हैं।** इसलिए इनके सेवन की मनाही की गई है।

इस समय आर्य समाज के उच्च विद्वानों में से एक श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग का वेदों और शास्त्रों का बहुत गहन अध्ययन है। वह लोगों की भाषा में वैदिक व आर्य समाज के सिद्धान्तों को पुस्तकों व लेखों द्वारा प्रचार हेतु प्रस्तुत करते हैं। गुरुकुल वालों की तरह संस्कृत में नहीं उलझाए रखते न ही उनकी तरह उन्होंने आर्य समाज को कर्मकाण्ड द्वारा धन कमाने का पेशा नहीं बनाया है। निशुल्क में ही पुस्तकें वितरित करते हैं। आवश्यकता है आम व्यक्ति को आर्य समाज के सिद्धांत उसी की भाषा में बताएँ जाए न कि उसको संस्कृत पढाई जाए। संस्कृत सीखनी होगी तो किसी संस्कृत के स्कूल में दाखिला ले लेगा। आर्य समाजी यह क्यों समझते हैं कि संस्कृत का ठेका आर्य समाज ने ही ले रखा है। 99 प्रतिशत संस्कृत स्नातक व संस्कृत के कालेज आर्य समाज से दूर हैं आर्श गुष्कुलों के स्नातक भी आर्य समाज को बारे में उतना ही जानते हैं जैसे मैं ईसाई स्कूल में पढ़ने के बाद या मेरी तरह असंख्य ईसा मसीह व मेरियम के बारे में जानती हूँ, परन्तु 97 प्रतिशत उन में आर्य समाजी नहीं होते। संस्कृत बहुत अच्छी व दुनिया की सब से पुरानी भाषा है जब की आर्य समाज वेदों पर आधारित विचारधारा है, हमने इस विचारधारा को फैलाना है न कि संस्कृत भाषा को। उदाहरण के लिए ईश्वर निराकार है उसकी मूर्ती नहीं बन सकती। यह आवश्यक नहीं कि हम इसे संस्कृत में कहें "न तस्य मूर्ती भवतु।" हम आम इंगलिश या किसी भी भाषा में कह सकते हैं



श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग

## NOT EVERYONE CAN BE HIS OWN LIGHT

**Bhartendu Sood**

The story goes that when Buddha was near death, it was unbearable for his disciples to imagine life without their Master, to whom they used to turn for light. They were worried how they would be able to live without the Buddha. As they all were crying at the very idea of Buddha leaving them, Anand, the chief disciple, was called by the Master and asked, what the reason for their sorrow was. To this Anand broke down and said that since the Master was not going to be around to lead and guide them, disciples were expecting darkness to descend on them. It was the cause of great despair. Who will now show them the light of life? What would happen to them without the Buddha?

The Buddha heard him and said: 'Aatm deepo bhav' -- be your own light. Find your own path and guide yourself with your own light. Theoretically this is the right lesson provided everyone is Buddha. The Buddha experienced enlightenment on his own. But the question is how to attain this, when the ordinary person cannot undergo the type of penance, Buddha underwent. Ordinary mortals can't be Buddha who spent years in the jungles in meditation to attain self-realisation.



Therefore, the ordinary mortals need either a master or the epics or holy books which throw light on the path prescribed by the Master. As we have Satyarth Prakash, Guru Granth sahib, Geeta, Bible, Koran and many others. Following books of the holy masters can be a better course than to

blindly follow the disciples of the holy master because the vast majority among humans are not without their weaknesses. As has been seen disciples have their own interpretation of the verses contained in the holybooks. For example, only if Buddha had read Vedas instead of relying upon what the so called Hindu priest told them about Vedic texts, he probably wouldn't have said, "I don't accept Vedas."

But, I believe that to a true searcher of the light, the unbiased and dispassionate study of the various sects can help him to select the right path for himself. Or even by sticking to the same sect, he can choose the course to be followed by having the courage to discard such rituals and practices which he feels has become redundant. This all is possible only when a man has the habit to think, meditate and look within. Not all ordinary mortals are equipped to do this in this workaday world.

## नमस्ते और स्वामी दयानंद

प्रियांशु सेठ



भारत के केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने 21 मार्च 2023 को अपने आधिकारिकट्विटर हैंडल से ट्वीट किया— "क्या आप जानते हैं कि 'नमस्ते' शब्द महर्षि दयानंद सरस्वती ने हमको दिया? वरना शायद हम आज अभिवादन के लिए किसी विदेशी शब्द का इस्तेमाल कर रहे होते।"

मंत्री जी की यह बात कुछ महानुभावों को सुई जैसी चुभ गई और उन्होंने पेट भरकर इसकी निंदा की। वेद और स्वामी दयानंद को कभी न पढ़ने वाले प्रसिद्ध पत्रकार व लेखक संदीप देव एवं संजय तिवारी मणिभद्र ने एक विशेषज्ञ की तरह अपनी टिप्पणी उछाल दी।

संजय तिवारी लिखते हैं— "...नमस्ते शब्द का उल्लेख यजुर्वेद में है। यह रुद्र के अभिवादन के लिए प्रयुक्त हुआ है।... अब इस बात से तो अमित शाह भी इंकार नहीं करेंगे कि यजुर्वेद स्वामी दयानंद सरस्वती के पहले लिखा गया होगा।..."

दूसरी ओर संदीप देव लिखते हैं— "...दयानंद जी जिन वेदों को केवल मानते हैं, उन वेदों में

'नमस्ते' कहां-कहां आया है, कभी पृष्ठ पलटकर देखा है आपने?..."

१. अब एक बात बताइए, यदि गांधी ने "भारत छोड़ो आंदोलन" दिया या सुभाष चंद्र बोस ने "दिल्ली चलो" का नारा दिया, तो क्या इसका मतलब यह है कि गांधी और बोस से पहले भारत या दिल्ली शब्द विद्यमान ही नहीं था? तिवारी जी के बौद्धिक दिवालियापन की हदपार तर्क का तो यहीं मटियामेट हो गया।

२. अब संदीप जी का आक्षेप देखते हैं।

क्या लिखा है वेदों में— "नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो

नमो आशिनेभ्यः।" —ऋग्वेद 1.27.13

"नमस्ते भगवन्नस्तु।" —यजुर्वेद 36.21

"नमस्ते अग्न ओजसे।" —सामवेद 1.1.2.1

"नमस्ते जायनामायै।" —अथर्ववेद 10.10.1

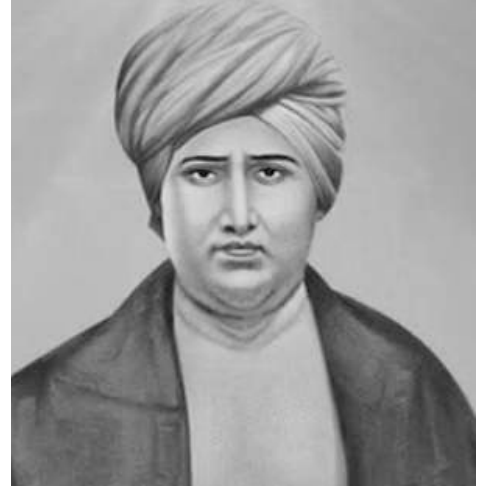
हां तो संदीप जी हमें बताएं कि आपके कौन से वेद में "नमस्ते" शब्द नहीं आया है? जितने जोश के साथ ये लोग दयानंद जी को लक्ष्य साधकर लिखते हैं, उतने ही होश से ये कभीस्वाध्याय कर लेते। दरअस्तल इनकी खीज अमित शाह के बयान से नहीं बल्कि स्वामी दयानंद और आर्यसमाज से है। ये लोग हिंदू समाज पर स्वामी दयानंद के योगदान का जिक्र तक नहीं करते।

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद ने डंके की चोट पर कहा— हमारे

धर्मग्रंथ वेद हैं, ईश्वर एक है; अनेक नहीं, शिक्षा का अधिकार स्त्री और शूद्रों को भी समान रूप से है, हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है, मनुष्य जन्म से नहीं बल्कि कर्म से ब्राह्मण बनता है, झूठ— मूठ कंठी, तिलक, उपदेश देने वाले गुरु नहीं गडरिए हैं, सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहिए, श्रीकृष्ण का चरित्र अत्युत्तम है; उन्होंने जन्म से मरणपर्यंत कोई अधर्म आचरण नहीं किया, चोरी, जुआ, मांसभक्षण, मद्यपान ये दुष्कर्म हैं, इत्यादि। कालांतर में आततायियों के हमलों और वेदों के अध्ययन के अभाव ने हिंदुओं के बौद्धिक स्तर को इतना गिरा दिया कि अनेक मत—मतांतर बना लिए गए। उनमें वे अभिवादन के रूप में राधे—राधे, कोई जय गुरुजी की, कोई जय जिनेन्द्र, कोई जय बाबा, कोई जय दादी की, कोई जय पीर बाबा की, कोई जय साईं राम, कोई जय काले कौवे की आदि अभिवादन कर सामाजिक एकता को भंग करने में लगे रहते थे।

स्वामी दयानंद ने वेदों का अनुशीलन करके अभिवादन के सही रूप "नमस्ते" को समाज में स्थापित किया जिसे हिंदू समाज सदियों पहले भूल चुका था। चूँ चूँ का मुरब्बा बन चुके हिंदू समाज को स्वामी जी के योगदान का आभारी होना चाहिए।

परमात्मा इन्हें सदबुद्धि दे!





## ATTITUDE OF GRATITUDE

Neela Sood



O my God, I have no words to thank you, but, with your deep wisdom I am sure I can see your glorious gifts. These words are the base of attitude of Gratitude.

Feeling of gratitude is a source of great strength and eternal bliss is universally accepted. The next question arises how to develop it. I think it is not difficult to do only if we develop a poetic perspective to look at the things around us. At any given situation in our life we are better than millions around us. Just have a look at the obituary column of a newspaper, there are many who could not attain the age at which we are still enjoying the countless bounties of nature.

Go to any hospital, you will get the feeling that you are very healthy and healthier than many. You may be sad because you don't have a mother or father but then there are many who lost the protecting hands of both parents in their childhood itself and had their rearing in some orphanage. You may be angry because you don't have a house of your own and have to bear with the frequent pricking of your landlord, but then you are better off than many who don't have any place to stay.

It is true, in any given situation we are better off than many around us and for this we should keep on thanking God who is the creator and without whose will, not even a small leaf on the tree can move. For a minute when we look at many disabled persons around us we will realize that we are blessed with numerous such precious bounties by God which they do not have and can't have even by paying in millions. We should acknowledge this and keep on thanking the creator of this Universe. When I was a child my grandmother told me a story of two brothers who by birth were joined from their backs. They met a sage who after seeing them said "I can understand that God has not been very kind to you but even in this condition you are better than many and for this you should thank the Supreme Power." Both the brothers laughed at the sage and with a feeling of contempt to the Almighty one of them said "Why do we need to thank Him or pray for His kindness and grace. Can there be any situation worse than this?"

After a few days that sage spotted them again. The one who had made disparaging remarks was weeping and wailing. When the sage enquired He said "Holy Man, you were right. My brother is dead and now I am moving with his dead corpse. I had not visualized such an eventuality." This may be a fable but the lesson is profound.

Yes, most of us do not have the heart to visualize the situations in which life is much harder, tougher and painful than in which we happen to be. If we are only looking at what others have and what we don't have, we will remain dissatisfied simply because even after getting that elusive, our mind will find a vacuum somewhere else. It is this habit of remaining dissatisfied which creates depression and this bottled up depression sometimes makes us take extreme steps.

When we stop damning ourselves for not being wealthier and more successful than what we are, when in some corner of our heart we have a space for those who are relatively much less privileged, when we remain grateful to Him for his countless bounties on us, when before nurturing big expectations from somebody we are humble enough to ask ourselves what I have done for him, then the happiness which flows is enduring and divine. A Chinese proverb- I stopped asking God for a pair of shoes when I saw a man without foot sums up the philosophy of a happy and contented person and such a man can never be overtaken by depression and resultant impulsive behaviour.

## महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जन्म जयन्ती के वर्ष में, आओं उन की मान्यताओं को याद करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सभी अपने समय की मान्यताओं को बुद्धि व तर्क पर आधारित बनाकर स्वीकार किया और केवल सत्य मान्यताओं का ही देश व समाज में प्रचार किया। क्या आप भी अपने समय की मान्यताओं को बुद्धि व तर्क द्वारा तोलते हैं? यदि आप ऐसा करते हैं तब तो आर्य समाजी कहलाने के हकदार हैं वरना हवन कुण्ड के पास केसरिया कपड़ा गले के चारों और लटकाकर, मन्त्र को समझे बिना स्वः स्वः करने से आर्य समाजी नहीं बन जाते।

### पहली मान्यता - Wordhip ideals not idols

महर्षि दयानन्द सरस्वती मूर्ती पूजा के सख्त खिलाफ थे परन्तु उन का कहना था

जिनकी मूर्ती बनाई गई है उनके जीवन की अच्छी बातों को जीवन में ढालें यही उनकी पूजा है चाहे वह भगवान राम हैं या श्री कृष्ण। आर्य समाज भगवान राम और श्री कृष्ण को इसी रूप में मानता है।

हम हर एक अंग में ऐक ऐक मान्यता लेंगे

**आपकी आत्मा में जो व्यवहार आपको अपने लिये अच्छा नहीं लगता वह भूल कर भी दूसरों के साथ न करे -यही धर्म है**

धर्म की जो बात सभी अपस के झगड़ों को खत्म कर सकती है वह है— आपकी आत्मा में जो व्यवहार आपको अपने लिये अच्छा नहीं लगता वह भूल कर भी दूसरों के साथ न करे। आज सभी झगड़े हैं ही इस लिये क्योंकि जो व्यवहार हम दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं वह हम दूसरों के साथ नहीं करते। अभी आर्य समाज के सत्संग में एक सुन्दर दृष्टांत देते हुये इसे समझाया। एक गांव में वहां का कोई किसान अपने गांव के बनिये से कुछ सामान लेने गया। सामान में एक किलो चीनी भी थी। ज बवह पैसे देकर बापिस आने लगा तो बनिया बोला आप गाय तो रखते होंगे। किसान ने कहा—रखता हूं। बनिया बोला—मुझे एक किलो गाय का घी चाहिये। किसान बोला, 600 रुपया किलो है। बनिये बोला, यह लिजिये 600 रुपया, मैं आपके साथ अपना नौकर भेज रहा हूं, उसे तोल कर घी दे दें। किसान ने नौकर को घी देकर भेज दिया। बनिये ने सोचा, घी को तोल कर देख लेना चाहिये पूरा भी है। जब उसने तोता तो 950 ग्राम निकला, अर्थात् 50 ग्राम कम। बनिये को बहुत गुस्सा आया, उसने नौकर को कहा, जाओ उस किसान को मेरे पास लेकर आओ। घी तोला तो सचमुच 50ग्राम कम था। किसान बोला—लाला जी इस में मेरा कसूर बिलकुल नहीं। मैं आपसे एक किलो चीनी लेकर गया था। वही चीनी का लिफाफा मैंने एक तरफ रख कर घी तोल दिया। लाला अब क्या बोलता। यह सच्चाई है कि जो व्यवहार हम दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं वह हम दूसरों के साथ नहीं करते। बनिया अगर चीनी का ठीक तौल किसान को देता तो उसे अवष्य घी पूरा मिलता। इस तरह अगर हमारा व्यवहार घामिकर्क हो तो यह लड़ार्त झगड़े, उंच नीच का सवाल ही पैदा न हों

**1857 की कांती से पहले साधुओं और मुसलमान सूफी सन्तों ने भी लोगों को जागृत करने के लिए सभाओं के आयोजन किए थे।**

1857 में भारत की स्वतंत्रता की पहली कांती में साधुओं और मुसलमान सूफी सन्तों ने भी लोगों को जागृत करने के लिए सभाओं के आयोजन किए थे। उस में एक सभा का आयोजन 1855 में स्वामी ओमानन्द, स्वामी पूर्णानन्द, दण्डी स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द ने की थी। स्वामी ओमानन्द जिनकी आयु उस समय 160 वर्ष थी, स्वामी दयानन्द के परदादा गुरु थे और स्वामी पूर्णानन्द जिनकी आयु उस समय 110 वर्ष थी दादागुरु थे। स्वामी विरजानन्द उस समय 79 वर्ष के थे। स्वामी दयानन्द उस समय 33 वर्ष के थे। स्वामी पूर्णानन्द ने ही स्वामी दयानन्द को स्वामी विरजानन्द के पास भेजा था।



## याचना करें तो केवल ईश्वर से

डॉ. दीपक आचार्य

मनुष्य का पूरा जीवन ऐषणाओं का पूरक और पर्याय रहा है, जहाँ सभी को कुछ न कुछ कामना हमेशा बनी ही रहती है। इसके सकारात्मक और नकारात्मक, वैयक्तिक अथवा सर्वमांगलिक प्रकार हो सकते हैं, लेकिन इच्छाओं और तृष्णाओं का सागर हर पल लहराता ही रहता है। कोई बिरला ही होगा जो संसार में आने के बाद इन इच्छाओं से परे रहकर जीवन जीना सीख जाए, अन्यथा घर-बार छोड़कर संन्यासी बने संत, मठाधीश और महामण्डलेश्वरों तक को बड़े-बड़े लोगों के आगे नतमस्तक होते और सांसारिक भोग-विलास में रमे देखा गया है।

ऐसे में शाश्वत सुख, शान्ति और भटकते हुए नजर आते हैं, पर आभास नहीं हो पा रहा है। हम भविष्य की कल्पनाओं, कामों स्थापित करने से लेकर मामूली को पूजते हैं, आदर-सम्मान देते हैं सेवा कार्यों में रमने लगते हैं, जिन लोगों



आत्मतोष की प्राप्ति के लिए लोग कहीं उन्हें इसका तनिक भी लोग अपनी तुच्छ इच्छाओं, तथा ऐषणाओं की पूर्ति की नींव कामों तक के लिए ऐसे लोगों और उनके लिए समर्पित होकर ऐसे का असली चरित्र कुछ अलगहोता है। प्रायः

हम जिन लोगों को बड़ा, प्रभावशाली, महान और लोकप्रिय मानकर पूजते और आदरकरते हैं, उनकी वास्तविकता से अनजान होने के कारण हम उनकी जी भरकर इतनी अधिक पूजाऔर चापलूसी करने लगते हैं, जिसकी दस फीसदी भी हम अपने माँ-बाप, गुरुजनों और वास्तविकआदरणीयों की नहीं करते। जिन लोगों को हम समर्थ और स्नेही मानकर पूजते हैं, कुछ न कुछ चाहने के फेर में श्वानों की तरह तलवे चाटते रहते हैं, उनमें से अधिकांश लोग स्वयं ही बड़े भिखारी की तरह जीवन गुजारते हैं। वे भी किसी न किसी और के सामने किसी न किसी शुभाशुभ कर्म और लाभ को पाने के लिए क्रीत दासों की तरह गिड़गिड़ाते और पद या कद की भीख मांगते नजर आते हैं। ऐसे लोगों के समक्ष याचना करना अपने माता-पिता, पूर्वजों, गुरुजनों और सभी श्रेष्ठजनों का अपमान है। इससे हमारे पितर अप्रसन्न होते हैंऔर अनिष्ट करते हैं।

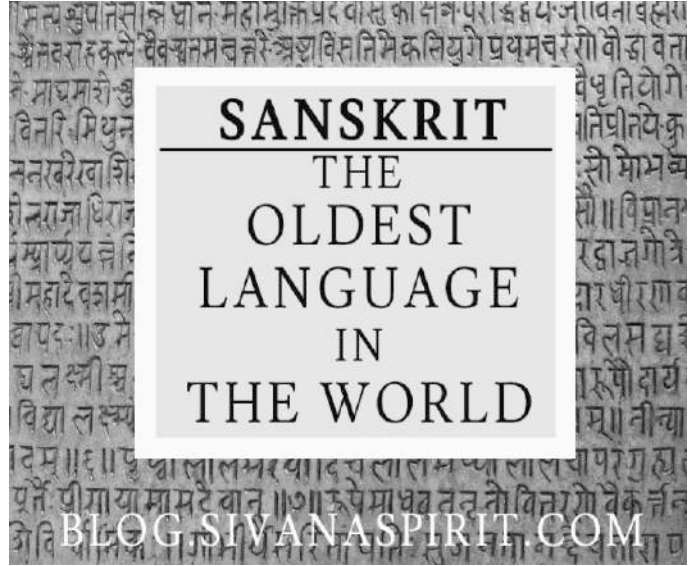
ऐसे में दुनिया के तमाम प्रपंचों और निराशाओं को त्यागकर भगवान की भक्ति और साधना मार्ग अपनाकर ही व्यष्टि और समष्टि का कल्याण संभव है। इसलिए शासन-प्रशासन केनुमाइन्दों और तथाकथित प्रभावशाली लोगों की जी हूजूरी, चापलूसी और षोडषांग समर्पण भावों कोछोड़कर परम सत्ता का आश्रय प्राप्त करके ही संसार का आनंद प्राप्त किया जा सकता है। लौकिक कामनाओं के वशीभूत होकर नेताओं, अफसरों और तथाकथित प्रभावशाली लोगों के पीछे भागने की मनोवृत्ति छोड़कर सर्वशक्तिमान परमात्मा का चिन्तन और आराधन करना चाहिए। जो मांगना है वह परमात्मा से ही मांगें, वही सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। हमारे जीवन का कोई भी कर्म ऐसा नहीं है जो परमात्मा से मांगने पर पूर्ण नहीं हो सकता है। हजार लोगों की जी हूजूरी से बढ़कर है दिन में एक बार भगवान का सच्चे मन से स्मरण, प्रार्थना और ध्यान। हमारी दिन भर की जो भी कामना है उसे प्रभु के सम्मुख स्पष्ट रूप से पूरी श्रद्धा और भक्ति भाव से कह दें, फिर देखें काम कैसे पूरा होता है।

इसकी बजाय हमकिसी गॉडफादर, गॉडमदर, आलाकमान या और किसी आदमी के इर्द-गिर्द चक्कर काटें, इससे कोई भला होने वाला नहीं है। जब एक बार हम ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा से समर्पित हो जाते हैं, तब हमारे सारे कामों की जिम्मेदारी, पारस्परिक नेटवर्किंग और सहयोग का काम ईश्वर अपने हाथ में ले लेता है। हमारा कोई भी काम क्यों न हो, ईश्वर से निवेदन करने पर वह भक्त के काम पूरे करने के लिए सूक्ष्मातिसूक्ष्म तरंगों के माध्यम से समर्थ व्यक्ति को प्रेरित कर देता है और जरूरत के समय पर ऐसे व्यक्ति हमें मिल जाते हैं, जिनके सहयोग से काम पूर्णता प्राप्त कर लेता है। इसलिए अनन्य भाव से ईश्वर का चिंतन करना अधिक लाभकारी है।

## WORLD'S 10 OLDEST LANGUAGES

### 10. Armenian Language

The Armenian language is also part of the Indo-European linguistic group, which is spoken by the Armenians. Bibles written in the fifth century exist as its earliest appearance. The Armenian language originated in 450 BC. At present, about 5 per cent of people speak this language. This language is spoken in Mesopotamia and the intermediate valleys of the caucuses and in the southeastern region of the Black Sea. The region falls in Armenia, Georgia and Azerbaijan (northwestern Iran). It is the official language of the Republic of Armenia.



### 9. Korean language

The Korean language is spoken from around 600 BC. At present, about 80 million people speak the Korean language. The script of this language is Hangul. In ancient times, the Chinese settled in Korea, so the Korean language is strongly influenced by the Chinese language.

### 8. Arabic language

This language is found in Hebrew and Arabic languages today. It was once the official language of the Armenian Republic. There is evidence of its presence even 1,000 years before Christ. Even today the Arabic language is spoken in Iraq, Iran, Syria, Israel, Lebanon and modern Rome.

### 7. Chinese Language

Chinese is the most spoken language in the world. It is spoken in China and some countries of East Asia. The Chinese language belongs to the Chinese-Tibetan language-family and is actually a group of languages and dialects. Standardized Chinese is actually a language called "mandarin". This language is 1200 years old even before the arrival of Jesus. Currently, about 1.2 billion people speak Chinese.

### 6. Greek Language

The Greek language is the oldest language in Europe, spoken since 1450 years before Christ. Currently Greek is spoken in Greece, Albania and Cyprus. About 13 million people still speak Greek today.

#### 5. **Egyptian Language**

The Egyptian language is the oldest known language in Egypt. This language belongs to the Afro-Asian linguistic family. It is 2600–2000 years old from Christ. This language is still keeping its nature alive.

#### 4. **Hebrew Language**

Hebrew is the language falling under the Semitic branch of the Sami-Hami language-family. The Hebrew language is about 3000 years old. It is currently the official language of Israel, after its extinction, the Israeli people revived it. The Jewish community considers it to be 'holy language' and the Old Testament of the Bible was written in it. The Hebrew language is written in the Hebrew script, read and written from right to left. Studies of Hebrew are relatively popular nowadays in Western universities. The official language of Palestine after the First World War is also modern Hebrew.

#### 3. **Latin Language**

Greek is the third oldest language in the world. Latin was the official language of the ancient Roman Empire and ancient Roman religion. It is currently the official language of the Roman Catholic Church and the official language of the Vatican City. Like Sanskrit, it is a classical language. Latin comes in the romance branch of the Indo-European language family. From this, French, Italian, Spanish, Romanian, Portuguese and the most popular language of the present time, English has originated. Due to the dominance of Christianity in Europe, Latin language in medieval and pre-modern times was the international language of almost all Europe, in which books of all religions, science, higher literature, philosophy and mathematics were written.

#### 2. **Tamil Language**

The Tamil language is recognized as the oldest language in the world and it is the oldest language of the Dravidian family. This language had a presence even around 5,000 years ago. According to a survey, 1863 newspapers are published in the Tamil language only every day. At present, the number of speakers of Tamil language is around 7.7 crores. This language is spoken in India, Sri Lanka, Singapore and Malaysia.

#### 1. **Sanskrit Language**

World's oldest language is Sanskrit. The Sanskrit language is called Devbhasha. All European languages seem inspired by Sanskrit. All the universities and educational institutions spread across the world consider Sanskrit as the most ancient language. It is believed that all the languages of the world have originated from Sanskrit somewhere. The Sanskrit language has been spoken since 5,000 years before Christ. Sanskrit is still the official language of India. However, in the present time, Sanskrit has become a language of worship and ritual instead of the language of speech. All the auspicious works performed in Hindu religion are recited by Veda Mantra, whose language is Sanskrit.



## जीवन में सफलता व उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य है केवल सकारात्मक भावों पर ध्यान केंद्रित करना

सीताराम गुप्ता

मुझे बचपन से ही बागबानी का शौक रहा है जो आज भी जारी है। घर में गमलों में जितने भी पौधे रहते हैं उन्हें मैं स्वयं ही लगाता हूँ। पौधे बाहर से कम से कम खरीदता हूँ। कई बार बीज बोकर या कलम लगाकर पौधे तैयार कर लेता हूँ तो कई बार स्वयं बिना बीज बोए या कलम लगाए भी पौधे मिल जाते हैं। प्रश्न उठता है कि बिना बीज बोए या कलम लगाए कहाँ से मिलते हैं पौधे? मैं पौधों की कटाई-छँटाई अथवा निराई भी स्वयं ही करता हूँ। पौधों की कटाई-छँटाई अथवा निराई या फालतू उग आए पौधों को उखाड़ते समय बहुत सतर्क रहता हूँ। फूलों अथवा फलों के पक जाने पर प्रायः उनके बीज वहीं झड़ जाते हैं और मिट्टी में मिल जाते हैं जो बाद में अनुकूल परिस्थितियाँ होने पर स्वयं ही उग आते हैं। मैं स्वयं उग आगे ऐसे पौधों को लापरवाही से उखाड़ कर फेंकने की बजाय उनकी सुरक्षा की ओर अधिक ध्यान देता हूँ। उन्हें हर तरह से बचाने का प्रयास करता हूँ और जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं तो उन्हें दूसरे गमलों में लगा देता हूँ।



हमारे चारों ओर न तो फूलों के पौधों की कमी होती है और न दूसरे बड़े वृक्षों की। ज़रूरत होती है उन्हें पहचानकर उन्हें नष्ट करने या अन्य किसी प्रकार से नष्ट होने से पहले पुनः सही जगह पर लगाने की। यदि हमने एक बार उन्हें बचाकर सही परिवेश उपलब्ध करवा दिया तो वे भी अपने पूरे जीवन काल तक हमारा साथ देंगे और हमें आकर्षक रंग-बिरंगे व सुगंधित फूलों और दूसरी उपयोगी चीजों का उपहार देते रहेंगे। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तो प्रकृति भी अवश्य ही हमारी रक्षा करेगी। यही स्थिति हमारे विचारों और आदतों की भी होती है। कहा गया है कि हम बिलकुल वैसे ही होते हैं जैसी हमारी सोच या हमारे विचार होते हैं। हम जैसे विचार रखते हैं अथवा जैसी आदतों का निर्माण अथवा विकास करते हैं वैसा ही हमारा जीवन बन जाता है। इसलिए जीवन को

अच्छे विचारों का चुनाव प्रदान करना अत्यंत

अब प्रश्न उठता है कैसे बनता या सँवरता है? विचार या तो अच्छे होते हैं कारण हम कार्य करते हैं निर्माण होता है। अच्छे अच्छे कार्य करने के लिए अथवा नकारात्मक विचार उत्तरदायी होते हैं। विचारों निर्माण व विकास होता अथवा भाव होंगे वैसी ही इसलिए अपने विचारों देखना और उनका



सार्थक बनाने के लिए करके उन्हें स्थायित्व आवश्यक है।

कि अच्छे विचारों से जीवन हमारे मन में उठने वाले या बुरे। इन्हीं विचारों के और हमारी आदतों का अथवा सकारात्मक विचार उत्तरदायी होते हैं तो बुरे गलत कार्य करने के लिए से ही हमारी आदतों का है। हमारे जैसे विचार हमारी आदतें बन जाएँगी। अथवा भावों को ठीक से विश्लेषण करना सीखना

बहुत महत्वपूर्ण है। विचारों अथवा भावों के सही चुनाव के बाद यदि हम केवल अच्छे अथवा सकारात्मक विचारों अथवा भावों पर ही ध्यान केंद्रित कर लें तो वे ही हमारे जीवन की वास्तविकता बन जाएँगे इसमें संदेह नहीं। एक किसान नई फसल आने पर सबसे पहले अगली फसल बोन के लिए न केवल फसल में से अच्छे से अच्छे बीजों का चयन करता है अपितु उन्हें पूरी तरह से सुरक्षित भी रखता है।

अच्छे विचार बिल्कुल अच्छे बीजों की तरह ही काम करते हैं। हम नन्हे पौधों अथवा बीजांकुरों की पहचान की तरह ही अच्छे विचारों अथवा भावों की पहचान करना अवश्य सीख लें। साथ ही हममें जो अच्छी आदतें हैं चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों उन्हें भी पहचानें और उन्हें नष्ट होने से बचाने का प्रयास अवश्य करें। यही छोटी-छोटी अच्छी आदतें एक दिन बड़ी बन जाती हैं और बड़े लाभ का कारण बन कर हमारे जीवन में क्रांति ला देती हैं। अच्छी आदतें चाहे कितनी भी छोटी क्यों न हों उन्हें न तो महत्वहीन ही समझना चाहिए और न कभी उन्हें त्यागना ही चाहिए। उन्हें निरंतर व्यवहार में लाने का प्रयास करते रहना चाहिए। हम जिस बड़ी अच्छी आदत अथवा अच्छाई की प्रतीक्षा में रहते हैं उसके हमारे पूरे जीवन काल में घटित होने की संभावना कम ही रहती है। वैसे भी हम किसी बड़ी अच्छी आदत के कारण बहुत से लोगों से नहीं जुड़ सकते जबकि छोटी-छोटी अच्छी आदतों को नियमित रूप से व्यवहार में लाने पर हम असंख्य लोगों से जुड़ कर उनके मनों में अपना स्थान बना सकते हैं। अपने संपर्क और संबंधों का दायरा विस्तृत कर सकते हैं।

जीवन में हर क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए केवल सकारात्मक विचारों अथवा भावों पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमारी विडंबना ये है कि हम प्रायः उपयोगी पौधों के अंकुरों अथवा छोटे-छोटे पौधों को महत्वहीन समझने की तरह ही सामान्य अच्छे विचारों को भी नजरअंदाज कर देते हैं व अनुपयोगी विचारों पर ध्यान केंद्रित कर उन्हें जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित कर डालते हैं। हमारा ध्यान हमारे उत्तम स्वास्थ्य व सक्रियता पर न रह कर प्रायः रंग-रूप व आकृति तथा व्याधियों पर केंद्रित रहता है। हम प्रायः भविष्य में होने वाली व्याधियों और समस्याओं की कल्पना कर न केवल वर्तमान में दुखी रहते हैं अपितु अपनी गहन कल्पना द्वारा उन स्थितियों को वास्तविकता में भी परिवर्तित कर लेते हैं। हम अपने आसपास के उन लोगों की स्थितियों को भी स्वयं पर आरोपित करते रहते हैं जो ठीक अवस्था में नहीं होते। जो लोग वर्तमान में बड़ी उम्र में भी स्वस्थ व सक्रिय जीवन व्यतीत कर रहे हैं उन पर हमारा ध्यान कम ही केंद्रित होता है।

हम चाहें तो दीर्घायुप्राप्त, स्वस्थ व सक्रिय, समृद्ध अथवा लोकप्रिय लोगों के जीवन को स्वयं पर आरोपित करके उन जैसा बन सकते हैं। हम ऐसा आसानी से कर सकते हैं लेकिन पूर्ण विश्वास के अभाव में ऐसा नहीं हो पाता। समझा ये जाता है कि रोगी होने की वजह से लोग नकारात्मक विचारों से ओतप्रोत व निराशावादी हो जाते हैं लेकिन वास्तविकता ये है कि नकारात्मक विचारों से ओतप्रोत व निराशावादी होने की वजह से हम रोगी होते हैं। जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों की वास्तविकता भी यही है। जीवन में किसी भी प्रकार की समृद्धि अथवा अभाव हमारे विचारों का ही परिणाम होता है। हम अपने खराब स्वास्थ्य अथवा विपन्नता के लिए विशम परिस्थितियों और दूसरे लोगों को दोष देते रहते हैं जबकि इसके लिए अन्य कोई दोषी नहीं होता क्योंकि ये पूर्णतः हमारा अपना चुनाव होता है। इसके लिए हमारे विचार ही पूर्ण रूप से उत्तरदायी होते हैं। जब तक हम विचारों के जमघट में से सही विचारों को चुनकर उन पर अपना ध्यान केंद्रित करना नहीं सीखेंगे हमारी समस्या का समाधान असंभव है।

सीताराम गुप्ता

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,

दिल्ली – 110034

मोबा0 नं0 9555622323

Email : srgupta54@yahoo.co.in

## SLIP BETWEEN THE CUP AND A LIP

**Bhartendu Sood**

I had gone to Assam on a recreation trip with my wife. Sivsagar formerly the capital of Ahom Kingdom was the part of our itinerary. We reached there by train in the morning hours. As we were moving towards the exit on the platform, my eyes fell on the board reading 'Retiring room'. "It will be a good idea to book it as tomorrow we have to catch the return train from here only." I shared with my wife who fully endorsed my idea and accordingly I went to the booking clerk and made a request. The clerk looked at my face and then quipped "Have you made online booking?" "No, Sir" I replied.

"Then it can't be given. Online booking is must. Now let me attend to other passengers." It became clear that he was in no mood to oblige. I thought for a while and again went to the window with a counter question, "Is it already booked online ? if yes, show me the record." Finding me a hard nut to crack he quipped, "No, it is not booked but I can't allot unless there is an advance booking."

Not the one who would give up so easily I said "Mr Clerk, I think you need to brush up your knowledge regarding rules governing booking of retiring rooms. Online booking is a facility to the passenger but if the room is empty and not booked then you are under obligation to allot to the passenger who approaches you first with a valid ticket. Mind you, with your negative attitude you are not only haraasing a Sr Citizen like me but depriving railways of the revenue. "

Bit shaken with my statement, he spoke to the Station master on phone and then passed on his phone to me for further conversation. Initially the Station Master looked unhelping but when I told that I was going to speak to their Zonal head, he changed stance and tried to cajole me by saying, " Sir, to tell you frankly, the room is very dirty. It is for this reason Booking Clerk was reluctant. Anyway, I am giving instructions to the him who would first show you the room." Room was opened and it was clear that it was being opened after many days. "Now you must have understood, why I was reluctant to allot to you." The Clerk said sheepishly to cover up his discourteous attitude " When you don't allot to needy passengers on flimy grounds, it will remain closed. Anyway, call the sweeper and get it cleaned. In the meanwhile we are taking tea in the canteen." I ordered like a big boss, the position which they had yielded due to their wrong approach .

" Sir, sweeper comes early in the morning and he has already left." he submitted expressing his helplessness. I looked at his face to convey that enough was enough and said, "Look, I have taken photographs of the room. If you don't get it cleaned within 30 minutes I will send to the railway Minister."

When we were back from the canteen, room and toilets were spic and span and he was opening almirah to take out bed sheets, pillow covers and towels. Obviously our faces wore the expressions of triumph but then I was wondering how many can really fight like this to exercise their right. Our PM's slogan-'Government for the people' has a long proverbial slip. It needs many years of struggle to fill up this gap.

## प्रसन्न रहना है ताविकल्पों का अभाव नहीं बस उन्हें खोजिए

सीताराम गुप्ता

प्रसन्नता एक अत्यंत दुर्लभ वस्तु है। नहीं प्रसन्नता एक दुर्लभ वस्तु नहीं है इसे आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। कहना आसान है प्रसन्न रहना आसान नहीं। प्रसन्नता और आज के ज़माने में? और भी बहुत सी बातें कही जा सकती हैं प्रसन्नता के विशय में। और ये सारी बातें षट-प्रतिषट सही हैं। प्रश्न उठता है कि परस्पर विरोधी सारी बातें सही कैसे हो सकती हैं? सही इसलिए कि कोई व्यक्ति जो कुछ भी कहता है वह उसकी सोच होती है और जैसी जिसकी सोच होती है उसके जीवन में वैसा ही घटित होने से कोई नहीं रोक सकता। जो सोचता है कि प्रसन्नता एक दुर्लभ चीज़ है तो ये बात भी ठीक है क्योंकि उसकी सोच के अनुसार वैसा ही होता है और प्रसन्नता उसके लिए सचमुच एक दुर्लभ चीज़ बनकर रह जाती है। और जो कहता है कि खुष रहना सरल है तो ये बात भी सालहों आने ठीक है क्योंकि उसकी सोच के अनुसार उसे खुषी मिलते देर नहीं लगती। ऐसा व्यक्ति अपनी सोच अथवा नज़रिए के कारण हमेशा खुष बना रहता है।

इससे तो लगता है कि हम अपनी सोच को बदलकर प्रसन्न रह सकते हैं। हाँ हम अपनी सोच को बदल कर प्रसन्न रह सकते हैं। कुछ व्यक्ति इसलिए कभी खुष नहीं रहते क्योंकि वे खुषी को चीज़ों में प्राप्त करना चाहते हैं। खुषी उनके लिए उपभोग की वस्तुओं में होती है। प्रसन्नता कोई वस्तु नहीं है इसलिए वह वस्तुओं से कैसे मिल सकती है? आर्थिक समृद्धि नहीं है अथवा पैसा प्रचुर मात्रा में नहीं है तो कुछ लोग प्रसन्न नहीं रह सकते। कुछ लोगों के लिए जीवन में निरंतर विकास करते रहना ही प्रसन्नता के लिए अनिवार्य षर्त होती है। निरंतर विकास करना और आगे बढ़ना बहुत अच्छी बात है लेकिन जीवन में हमेशा ऐसा नहीं होता। कभी लाभ तो कभी हानि होना स्वाभाविक है। वास्तव में इस सत्य को स्वीकार करने की क्षमता उत्पन्न करना ही वास्तविक विकास है जिसके अभाव में हम प्रसन्न नहीं रह सकते। पैसे और दूसरी सुविधाओं के संबंध में भी यही बात लागू होती है। यदि पैसे और सुविधाओं से ही प्रसन्नता प्राप्त होती तो सभी पैसेवाले सबसे अधिक प्रसन्न रहते लेकिन ऐसा भी देखने को बिलकुल नहीं मिलता।

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो अधिक पैसेवालों से कम पैसेवाले और कम पैसेवालों से ग़रीब लोग ज़्यादा प्रसन्न दिखलाई पड़ते हैं। इसका ये अर्थ नहीं कि हम खुष रहने के लिए ग़रीब होने का प्रयास करें अथवा आगे बढ़ने का प्रयास करना छोड़ दें। हम निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करें लेकिन वर्तमान स्थिति को भी स्वीकार करें। आगे बढ़ने के लिए एक अनिवार्य तत्त्व है आषावादिता। हम हमेशा आषावादी और सकारात्मक बने रहें और साथ ही वर्तमान परिस्थितियों में खुष रहने अथवा खुषी प्राप्त करने के दूसरे कारणों को खोजें। कई बार जब कोई भीशण दुर्घटना हो जाती है और हम बच जाते हैं या कम चोट लगती है तो हम दुखी नहीं खुष होते हैं कि हम बच गए। हमारे पास खुष रहने का सबसे बड़ा कारण तो हम स्वयं ही होते हैं। हमारा अस्तित्व है और हम कुछ भी कर सकने में समर्थ हैं ये खुष रहने का बहुत बड़ा कारण है। दूसरे अन्य बहुत से लोग खुष रह सकते हैं तो हम क्यों नहीं खुष रह सकते? हम विशम परिस्थितियों में भी संघर्ष कर सकते हैं ये भी खुष रहने का एक बहुत बड़ा कारण है।

एक बच्चा जितनी जल्दी परेषान होता है उतनी ही जल्दी परेषानी से बाहर आ जाता है। बड़े भी बच्चों का ये गुण अपना सकते हैं। जब भी कोई परेषानी हो उससे बाहर निकलने का प्रयास करें। मन को किसी अन्य सामान्य अथवा सुखद घटना पर केंद्रित करके हम आसानी से ये कार्य कर सकते हैं। हम समस्याओं अथवा अभावों के साथ भी खुष रह सकते हैं बस अपनी सोच में थोड़ा बदलाव करने की आवश्यकता है। जब हमारा जीवन सुचारु रूप से संचालित होता रहता है अथवा हमारी मनचाही स्थितियाँ निर्मित होती रहती हैं तो हमें



प्रसन्नता होती है। जब इसमें ब्रेक लग जाता है तो हमारे दुखों की सीमा नहीं रहती। दुख का एक कारण वास्तव में किसी लक्ष्य की पूर्ति अथवा जीवन की निरंतरता में बाधा उत्पन्न होना ही होता है। जब हमें कहीं जाना हो और रास्ता बंद मिले तो हम घबरा जाते हैं। ऐसे में समझदार व्यक्ति फौरन कोई दूसरा रास्ता खोजकर अपने गंतव्य की ओर रवाना हो जाता है। खोजने वाले के लिए विकल्पों की कमी नहीं होती।

बीमारी की अवस्था में जब हम किसी डॉक्टर के पास जाते हैं तो कई बार लंबे उपचार के बाद भी बीमारी का इलाज नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? ऐसी स्थिति में कुछ लोग निराश हो जाते हैं और ये सोचकर कि मेरी बीमारी का कोई इलाज नहीं इलाज करवाना ही बंद कर देते हैं। क्या ये सही है? बिलकुल नहीं। हर व्याधि अथवा समस्या का कोई न कोई उपचार अवश्य होता है अतः हमें बीमारी का उपचार अथवा समस्याओं का हल होने तक प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिए। जब लगातार कुछ समय तक उपचार करवाने के बाद लाभ नहीं होता तो एक समझदार व्यक्ति किसी अन्य डॉक्टर के पास चला जाता है। कई बार कई डॉक्टर भी बदलने पड़ सकते हैं। चिकित्सा पद्धति को बदलने की भी जरूरत पड़ सकती है लेकिन हम बदलाव से बहुत घबराते हैं। बदलाव अथवा परिवर्तन का अर्थ ही ये है कि हमारे पास अन्य विकल्प हैं जिन्हें हम अपना सकते हैं। विशम परिस्थितियों में जीवन के हर क्षेत्र में नए विकल्पों को खोजने करने की आवश्यकता होती है। आवश्यकतानुसार अपनी प्राथमिकताओं को बदलिए। अपने लक्ष्यों का पुनः निर्धारण कीजिए। उनके लिए कार्य कीजिए। उनमें सफलता मिलने पर खुशी होगी।

कई बार जीवन में सब कुछ छिन जाता है अथवा सब कुछ नश्ट हो जाता है। आदमी अकेला रह जाता है। क्या ऐसे में भी व्यक्ति खुशी ढूँढ़ सकता है, प्रसन्न रह सकता है? नहीं, ऐसे में खुशी खोजना मुश्किल है। लेकिन जब समस्याओं अथवा दुखों की सीमा नहीं रहती तब भी आदमी मरता नहीं है। वह जीवित रहता है। जीवित रह सकता है तो दुखों से भी समझौता कर सकता है। खुश रहने का प्रयास कर सकता है। ठीक से जीवित रहना है तो दुखों से समझौता भी करना चाहिए। खुश रहने का प्रयास भी करना चाहिए। यदि खुश रहने का प्रयास करेंगे और दूसरी चीजों में खुशी खोजने का प्रयास करेंगे तो खुशी मिलना मुश्किल बेषक हो असंभव तो बिलकुल नहीं। कई व्यक्ति खानपान के मामले में बड़े जिद्दी होते हैं। विशम परिस्थितियों में मनचाही चीजें नहीं मिलें तो भूखे रह जाएंगे लेकिन पसंद से अलग चीजें बिलकुल नहीं खाएंगे। जब कभी अत्यंत विशम परिस्थितियों में वे अपनी जिद्द छोड़कर दूसरी चीजें ग्रहण कर लेते हैं तभी उन्हें एहसास होता है कि ये चीजें भी न केवल खाई जा सकती हैं अपितु बहुत अच्छी हैं।

हम जिन वस्तुओं अथवा स्थितियों में खुशी देखने के अभ्यस्त हो चुके हैं उनके अतिरिक्त भी अनेक वस्तुओं अथवा स्थितियों में खुशी मिलना संभव है। बस इस तथ्य को स्वीकार करने और थोड़ा प्रयास करने की आवश्यकता है। पुरानी बातों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। खुशियाँ कई बार स्वाभाविक रूप से नहीं मिलतीं। उन्हें खोजना पड़ता है। एक तरह से निर्मित करना पड़ता है। विशम परिस्थितियों में व्यक्ति निराश होकर बैठ जाता है। निश्क्रिय हो जाता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना छोड़ देता है। एकाकी होकर रहने लगता है। इससे परिस्थितियाँ और खराब हो जाती हैं। स्थितियों को बदतर होने से बचाने के लिए निराशा से बाहर निकलने का प्रयास करते रहना चाहिए। अपने स्वास्थ्य और खानपान का ध्यान रखना चाहिए। लोगों से मिलना-जुलना किसी भी हालत में बंद नहीं करना चाहिए। निराश हुए बिना खुशियों की तलाश जारी रखिए खुशियाँ अवश्य मिलेंगी। मनचाहे सपने का टूटना ही दुख है अतः नए सपने, अच्छे सपने बुनना प्रारंभ कर दीजिए।

जीवन सपनों से अधिक कुछ नहीं होता। जैसा सपना वैसा जीवन। सपने देखना मत छोड़िए। अच्छे सपनों की पूर्णता पर ही नहीं उन्हें देखने से भी खुशी ही मिलती है। विशम परिस्थितियों के लिए किसी को दोशी मत ठहराइए। स्वयं को भी नहीं। कई बार मात्र संयोग होता है विशम परिस्थितियों के उत्पन्न होने का। हम जा रहे हैं और अचानक पहाड़ से लुढ़कता हुआ एक पत्थर आता है और बहुत कुछ अनिष्ट घटित हो जाता है। किसे दोष देंगे? हाँ, विशम परिस्थितियों में कई बार लोग भी साथ नहीं देते। कोई बात नहीं। उनकी भी षिकायत मत कीजिए अपितु अपनी संपूर्ण चेतना को एकत्र करके अकेले चल पड़िए। मन को कमजोर मत पड़ने दीजिए। मन में हमेषा दोहराते रहिए कि प्रसन्नता मेरा अधिकार है। मैं प्रसन्न हूँ। दोहराने के साथ-साथ प्रसन्नता का अनुभव कीजिए। उन क्षणों को याद कीजिए जब आपने सर्वाधिक प्रसन्नता का अनुभव किया था। साथ ही उन स्थितियों की कल्पना कीजिए जिन स्थितियों में आपको खुशी मिल सकती है। जिस दिन ये कल्पना मात्र ही कर सकोगे प्रसन्नता दूर नहीं रहेगी।



## मानवीय गुणों के बिना व्यर्थ है वैभव

डॉ. दीपक आचार्य

इतिहास उन्हीं का बनता है जो परोपकार और सेवा का जज्बा लेकर जीते हैं। उनका नहीं जो पद, प्रतिष्ठा, धनसंग्रह, व्यभिचार और ऐशो आराम को ही सर्वस्व मानकर दिन-रात भोग-विलास और लूट-खसोट, शोषण में डूबे रहते हैं। दुनिया में दो तरह के व्यक्ति होते हैं। एक वे हैं जिनकी वजह से उनका पद, परिवेश और परिवार गौरवान्वित होता है। ऐसे व्यक्तियों का अपना कद बहुत ऊँचाइयों पर होता है। दूसरे वे हैं जिनका अपना कोई कद नहीं होता, बल्कि पुरखों के पुण्य या पूर्वजन्म के किन्हीं अच्छे कर्मों के फलस्वरूप अच्छे ओहदों पर जा बैठे हैं या अच्छा धंधा कर रहे हैं।

अपने आस-पास ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है, जिन्हें देखकर हर कोई यह कहेगा कि अमुक आदमी इस पद पर कैसे बैठ गया या इसमें इतनी काबिलियत तो है नहीं और पद मिल गया। ऐसे में कितनी ही अच्छी कुर्सी प्राप्त क्यों न हो जाए, कोई भी यह स्वीकार करने को तैयार नहीं होगा कि इसके पीछे उनकी बुद्धि का कौशल या त्याग है। बड़े-बड़े राजनेता, अफसर और व्यापारी आपको ऐसे मिल जाएंगे, जिनके जीवन को देखकर सहसा यही बोल फूट पड़ते हैं कि पहले जन्मों के संसार में भगवान की सबसे उत्कृष्ट कृति कोई है तो वह मनुष्य ही है।

ईश्वर बहुत से दैवीय कार्य मनुष्यों के माध्यम से पूर्ण कराता है। इस दृष्टि से मनुष्य पृथ्वी पर देवता का प्रतिनिधि है और उसका अंश भी। मनुष्य के लिए जीवनचर्या की अपनी आचार संहिता है, जिस पर चलकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त करता है और जीवन की यात्रा पूर्ण कर अगले लक्ष्य के लिए प्रस्थान कर जाता है। मनुष्य के जन्म लेने से लेकर मृत्यु तक उसकी सारी गतिविधियां कैसी होनी चाहिए, इस बारे में वेदों और धर्म शास्त्रों में सटीक एवं साफ-साफ निर्देश दिया हुआ है। जीवन निर्वाह की आदर्श आधारशिला पर चलकर मनुष्य अपने जीवन को धन्य कर सकता है और इतिहास में अमिट पहचान कायम कर सकता है। लेकिन ऐसा वे ही कर सकते हैं, जो सेवाव्रती हों तथा जगत के उत्थान के लिए पैदा हुए हैं।

किसी पुण्य का लाभ मिल रहा है वरना यह ओहदा उनके बस का नहीं है। न ये ओहदे के लायक हैं। हमने अब तक कितने ही नेताओं, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, आरपीएस और ऐसे कितने ही पदनामों वाले ब्राण्डेड लोगों की भीड़ देखी है, लेकिन इसमें पद के अनुरूप योग्यता और व्यक्तित्व वाले लोग कितने होंगे, इसका अन्दाजा लगा पाना कोई मुश्किल नहीं है। यद्यपि खूब सारे लोग ऐसे भी होते हैं जिनके बहुआयामी कर्मयोग और तेजस्वी व्यक्तित्व के आगे उनका पद बौना ही सिद्ध होता है।

**पद पा लेना ही जीवन की सफलता नहीं है बल्कि पद के अनुरूप योग्यता और लोक सेवा की भावना ज्यादा जरूरी है। मजा तब है, जब हमारे व्यक्तित्व के आगे पद हमेशा बौना नज़र आए और लोग यह कहें कि कुसएँ से व्यक्ति नहीं बल्कि इस व्यक्ति के कारण यह कुसएँ धन्य है। यदि ऐसा नहीं है तो मान लें कि संसार के करोड़ों पशुवत् प्राणियों की भीड़ में हम भी नज़र आते और गिने जाते रहेंगे।**

## धर्म और सम्प्रदाय

धर्म व सम्प्रदाय दोनो अलग हैं हालाकि सम्प्रदाय में धर्म की बातें हो भी सकती है, नहीं भी। जैसे कि हिन्दु,सिक्ख, ईस्लाम ये सभी सम्प्रदाय हैं इन सभी में धर्म की बहुत सी अच्छी बातें है। परन्तु पूजा पद्धति, माला जपना, हवन करना ये सब कर्मकाण्ड हैं, इनके बिना भी आदमी धार्मिक हो सकता है। धर्म के गुणों का पालन आपको चाहे बुराई से दूर न करे पर सचेत अवष्य करता है। यही नहीं धर्म के पालन से कर्तव्य का आभास अच्छे बुरे की पहचान सदैव बनी रहती है।

मनु महाराज ने कहा है, कर्मकाण्ड, आडम्बर, बाहरी चिन्ह धार्मिक होने की निशानी नहीं। आचार्य चाणक्य के अनुसार सब सुखों का मूल धर्म है। वे सभी बातें,कार्य व व्यवहार जो व्यक्ति के स्वयं के लिए और अन्य जनों के लिये सुखकारक हों वह धर्म कहलाता है। मनुष्य का धर्म वही है जो उसे मानवता सिखाए—“मनुर्भव”। महर्षि व्यास ने आचारण की कसौटी बताते हुये कहा कि दूसरो के साथ वैसा व्यवहार न करो जैसा कि तुम अपने प्रति नहीं चाहते।

प्रायः लोग धर्म और मजहब या साम्प्रदाय को एक ही समझते हैं। पर धर्म और मजहब समान अर्थ नहीं है और न ही धर्म ईमान या विश्वास का पर्याय है।

1 धर्म अध्यात्मक वस्तु है मजहब विश्वासात्मक वस्तु है। धर्म आपकी आत्मा का भोजन है और आत्मा को उपर उठाता है और षक्ति देता है, धर्म सब के लिए एक है चाहे वह छोटा हो, निर्धन हो, बच्चा जवान या बूढ़ा हो, स्त्री हो या पुरुष, गृहस्थ हो या सन्यासी हो। धर्म जगह स्थान के साथ बदलता नहीं है। धर्म की परिभाषा अमेरिका में भी वही है जो भारत में। धर्म की परिभाषा समय के साथ बदलती नहीं है।

धर्म पालन करने से यही जन्म नहीं बल्कि अगला जन्म भी सुघरता है। जब कि यह आप मजहब के बारे में नहीं कह सकते। मजहब आत्मा को पतित कर बहुत घृणित कार्य के लिये भी प्रेरित कर सकता है। जैसा कि हम हर मजहब चाहे मुसलमान, हिन्दु और सिक्ख संघटनों के कुछ लोगों के कार्यों में देखते हैं, मजहब की आड़ में मजहब के ठेकेदार और अनुयाई बेकसूर व्यक्तियों की जान लेने से भी नहीं चूकते और कई बार गाय के लिये इंसान को भी मार देते है, किसी धार्मिक पुस्तक के अपमान के संदेह में जान तक ले लेते हैं। वे यह नहीं समझते, पुस्तकें तो धर्म और ज्ञान को संचित करने का साधन है, जब पुस्तकें नहीं थी तो केबल बोल कर षब्दो द्वारा यह ज्ञान दिया जाता था तभी तो वेद को श्रुती कहा गया। यही नहीं इस कम्प्यूटर के आगे बढ़ते षायद यह पुस्तके न भी रहें तब भी यह धर्म तो रहेगा ही।

धर्म दूसरों के हितों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक देना सिखाता है जबकि मजहब अपने हित के लिए अन्य मनुष्यों और पशुओं के प्राण हरने के लिए भी प्रेरित कर सकता है।

3. धर्म मनुष्य के स्वाभाव और मानवी प्रकृति के अनुकूल तथा स्वाभाविक है और उसका आधार ईश्वर अथवा सृष्टि नियम है। परन्तु मजहब मनुष्यकृत होने से अप्राकृतिक अथवा अस्वाभाविक हैं। मजहबों का अनेक व भिन्न-भिन्न होना तथा परस्पर विरोधी होना उनके मनुष्यकृत अथवा बनावटी होने का प्रमाण है।

4. धर्म के जो लक्षण मनु महाराज ने बतलाये हैं वह सभी मानव जाति के लिए एक समान है और कोई भी सभ्य मनुष्य उसका विरोधी नहीं हो सकता। यह धर्म के लक्षण है—

1 धृति सदा धैर्य रखना

2 क्षमा निन्दा, स्तुति, मान अपमान, हानि-लाभ में भी सहनशीलता रखना

3 दम मन को सदा धर्म में प्रवृत्त करना तथा अणर्म से रोकना

4 अस्तेय चोरी न करना अर्थात् छल कपट विश्वासघाट द्वारा किसी पदार्थ को ग्रहण न करना।

5 शौच शरीर की स्वच्छता रखना।

- 6 इन्द्रिय निग्रह इन्द्रियों को वश में रखना, बुरी इच्छाओं को रोकना व इन्द्रियों को अच्छे काये की ओर प्रेरित करना ।
- 7 धी: मादक पदार्थों का सेवन न करना, बुरी सगंती का त्याग व अच्छी सगंत, आलस्य व अति भोग का त्याग, सात्विक पदार्थों का ही सेवन, योगाभ्यास, अच्छे आचरण व शुभ कर्मों द्वारा बुद्धि को श्रेष्ठ बनाना ।
- 8 विद्या यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना, ऐसा ज्ञान जो हमें पाखण्ड व अन्धविश्वास से दूर करे व मन बचन कर्म से एक बनाए ।
- 9 सत्य जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही समझना, वैसा ही बोलना व वैसा ही करना
- 10 अक्रोध बुरी भावना से किसी को हानि पहुंचाने के लिए अपशब्द या दुर्व्यवहार न करना ।
- यही गुण मनुष्य को अच्छे आचरण की ओर ले जाते हैं । धर्म भौगोलिक सीमाओं में नहीं बंधा हुआ । मजहब अनेक हैं और केवल उसी मजहब को मानने वालों द्वारा ही स्वीकार होते हैं । इसलिए वह सार्वजानिक और सार्वभौमिक नहीं है । कुछ बातें सभी मजहबों में धर्म के अंश के रूप में हैं और जीवन को अच्छा बनाती है । इसलिए मजहबों का कुछ मान बना हुआ है पर जब साम्प्रदाय किसी द्वारा अपना वरवस्व बनाने के लिये प्रयोग किया जाता है तो उस में अच्छाई का स्थान बुराई ले लेती है, जैसे कि कई खुखार संस्थाएँ ईसलाम के नाम पर कर रही है, वे लोग मजहब का अर्थ अपने ढंग से निकालते हैं जैसे कि **Islamic State** वालों ने कहा कि इसलाम में रमजान, जो मुसलमान नहीं हैं, उनकी जान लेने का पर्व है ।
5. धर्म सदाचार रूप है । अतः धर्मात्मा होने के लिये सदाचारी होना अनिवार्य है । परन्तु मजहबी अथवा पंथी होने के लिए सदाचारी होना अनिवार्य नहीं है । अर्थात् जिस तरह धर्म के साथ सदाचार का नित्य सम्बन्ध है उसी तरह मजहब के साथ सदाचार का कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि किसी भी मजहब का अनुयायी न होने पर भी कोई भी व्यक्ति धर्मात्मा ;सदाचारी बन सकता है ।
7. धर्म मनुष्य को ईश्वर से सीधा सम्बन्ध जोड़ता है परन्तु मजहब आवश्यक नहीं मनुष्य को ईश्वर के साथ जोड़े । यही नहीं ईश्वर से दूर भी ले जा सकता है क्योंकि जब व्यक्ति अपने मजहब की आड़ में ईश्वरीय गुण जिस में मानव और प्राणियों से प्यार करना मुख्य है को त्याग देता है तो वह ईश्वर से दूर हो जाता है ।
10. धर्म मानव बनने की बात करता है । धर्म मनुष्य को सभी प्राणी मात्र से प्रेम करना सिखाता है, जब कि मजहब हिन्दु, मुसलमान ईसाई और सिक्ख आदि बनने की बात करता है ।
14. यदि धर्म को समझकर आप मजहबी है तो आप सम्भवत मजहब की बुराईयों से दूर रहेंगे । धर्म आपको गलत रासते पर नहीं जाने देगा ।

## पुस्तक

### (English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम **Our Musings** है । इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है । जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है । बैंक ऐकाउंट वही है जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये हैं । भेजने का खर्चा हमारा होगा ।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईंगलिश भाषा में है ।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है



नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है । लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए हैं  
न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मान्य है ।

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059  
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली  
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

**A/c No. : 32434144307**

**Bank : SBI**

**IFSC Code : SBIN0001828**

**All donations to this organization are exempted under section 80G**





स्वर्गीय  
श्रीमती शारदा देवी  
सूद

निर्माण के 70 वर्ष

# गौस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई  
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)



स्वर्गीय  
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त  
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaligar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

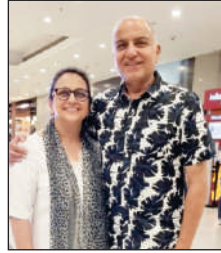
शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

## जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



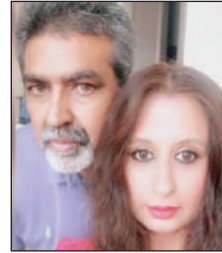
CHARU JAIN



DR JYOTSNA 2



NAVNEET



BABLOO SHARMA



DR ANSHU SHARMA



MRS AND MR. O.P.NANDWANI



KC GARG



CAPT ASHWIN VERMA



CHITKARA MADAN LAL



DHARAMBIR SALWAN

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children





# DIPLAST

TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972  
FOR BETTER HOMES











IS : 12701



Water Storage Tanks  
Diplast Water Storage Tanks

IS : 4985



PVC Pressure Pipes  
Diplast PVC Pressure Pipes

IS : 9537



PVC Electrical Conduits  
Diplast PVC Electrical Conduits

IS : 13592



PVC SWR Pipes  
Diplast PVC SWR Pipes

Learn Waste Segregation & Composting on Zoom Meeting

Contact : 9041655102

**DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)**  
**Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187**

## विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh  
9217970381 and 0172-2662870**